सामाजिक विज्ञान

भारत और समकालीन विश्व-2

कक्षा 10 के लिए इतिहास की पाठ्यपुस्तक

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

प्रथम संस्करण
अप्रैल 2007 चैत्र 1929

पुनर्मुद्रण
फ़रवरी 2008 माघ 1929
जनवरी 2009 माघ 1930
जनवरी 2010 माघ 1931
जनवरी 2011 माघ 1932
जनवरी 2012 माघ 1933
जनवरी 2013 माघ 1934
नवंबर 2013 कार्तिक 1935
दिसंबर 2014 पौष 1936
फ़रवरी 2016 माघ 1937
दिसंबर 2016 पौष 1938
दिसंबर 2017 पौष 1939
फ़रवरी 2019 फाल्गुन 1940
अक्तूबर 2019 अश्विन 1941

PD 80T RSP

₹ 125.00

एन.सी.ई.आर.टी. वाटरमार्क 80 जी.एस.एम. पेपर पर मुद्रित।

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा आदर्श प्रा. लि., शिखर वार्ता-4, इंदिरा प्रैस कॉम्प्लेक्स, एम.पी. नगर, भोपाल 462 011 (म.प्र.) द्वारा मुद्रित।

ISBN 81-7450-712-4

एन सी ई आर टी के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
हेली एक्सटेंशन, होस्डेकेरे
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फोन : 079-27541446

सी.डब्ल्यू.सी. कैंपस
निकट: धनकल बस स्टॉप पनिहटी
कोलकाता 700 114 फोन : 033-25530454

सी.डब्ल्यू.सी. कॉम्प्लेक्स
मालीगांव
गुवाहाटी 781 021 फोन : 0361-2674869

प्रकाशन सहयोग

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग	: *अनुप कुमार राजपूत*
मुख्य संपादक	: *श्वेता उप्पल*
मुख्य उत्पादन अधिकारी	: *अरुण चितकारा*
मुख्य व्यापार प्रबंधक	: *बिबाष कुमार दास*
संपादक	: *नरेश यादव*
उत्पादन सहायक	: *राजेश पिप्पल*

आवरण, सज्जा एवं चित्र
पार्थिव शाह
सहयोगी– *श्रबोणी रॉय तथा शिवराज पात्र*

नक़्शानवीसी
के. वर्गीस

आमुख

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (2005) सुझाती है कि बच्चों के स्कूली जीवन को बाहर के जीवन से जोड़ा जाना चाहिए। यह सिद्धांत किताबी ज्ञान की उस विरासत के विपरीत है जिसके प्रभाववश हमारी व्यवस्था आज तक स्कूल और घर के बीच अंतराल बनाए हुए है। नयी राष्ट्रीय पाठ्यचर्या पर आधारित पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें इस बुनियादी विचार पर अमल करने का प्रयास हैं। इस प्रयास में हर विषय को एक मज़बूत दीवार से घेर देने और जानकारी को रटा देने की प्रवृत्ति का विरोध शामिल है। आशा है कि ये कदम हमें राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में वर्णित बाल-केंद्रित व्यवस्था की दिशा में काफ़ी दूर तक ले जाएँगे।

इस प्रयत्न की सफलता अब इस बात पर निर्भर है कि स्कूलों के प्राचार्य और अध्यापक बच्चों को कल्पनाशील गतिविधियों और सवालों की मदद से सीखने और अपने अनुभव पर विचार करने का अवसर देते हैं। हमें यह मानना होगा कि यदि जगह, समय और आज़ादी दी जाए तो बच्चे बड़ों द्वारा सौंपी गई सूचना-सामग्री से जुड़कर और जूझकर नए ज्ञान का सृजन करते हैं। शिक्षा के विविध साधनों व स्रोतों की अनदेखी किए जाने का प्रमुख कारण पाठ्यपुस्तक को परीक्षा का एकमात्र आधार बनाने की प्रवृत्ति है। सर्जना और पहल को विकसित करने के लिए ज़रूरी है कि हम बच्चों को सीखने की प्रक्रिया में पूरा भागीदार मानें और बनाएँ, उन्हें ज्ञान की निर्धारित खुराक का ग्राहक मानना छोड़ दें।

ये उद्देश्य स्कूल की दैनिक ज़िंदगी और कार्यशैली में काफ़ी फेरबदल की माँग करते हैं। दैनिक समय-सारणी में लचीलापन उतना ही ज़रूरी है जितना वार्षिक कैलेण्डर के अमल में चुस्ती, जिससे शिक्षण के लिए नियत दिनों की संख्या हकीकत बन सके। शिक्षण और मूल्यांकन की विधियाँ भी इस बात को तय करेंगी कि यह पाठ्यपुस्तक स्कूल में बच्चों के जीवन को मानसिक दबाव तथा बोरियत की जगह खुशी का अनुभव बनाने में कितनी प्रभावी सिद्ध होती है। बोझ की समस्या से निपटने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं ने विभिन्न चरणों में ज्ञान का पुनर्निर्धारण करते समय बच्चों के मनोविज्ञान एवं अध्यापन के लिए उपलब्ध समय का ध्यान रखने की पहले से अधिक सचेत कोशिश की है। इस कोशिश को और गहराने के यत्न में यह पाठ्यपुस्तक सोच-विचार और विस्मय, छोटे समूहों में बातचीत एवं बहस और हाथ से की जाने वाली गतिविधियों को प्राथमिकता देती है।

एन.सी.ई.आर.टी. इस पुस्तक की रचना के लिए बनाई गई पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति के परिश्रम के लिए कृतज्ञता व्यक्त करती है। परिषद् सामाजिक विज्ञान सलाहकार समूह के अध्यक्ष, प्रोफ़ेसर हरि वासुदेवन, इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता एवं इतिहास पाठ्यपुस्तक समिति के मुख्य सलाहकार, प्रोफ़ेसर नीलाद्रि भट्टाचार्य, इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली की विशेष आभारी है। इस पाठ्यपुस्तक के निर्माण में कई शिक्षकों ने योगदान दिया; इस योगदान को संभव बनाने के लिए हम उनके प्राचार्यों के आभारी हैं। हम उन सभी संस्थाओं और संगठनों के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होंने अपने संसाधनों, सामग्री और सहयोगियों की मदद लेने में हमें उदारतापूर्वक सहयोग दिया। हम माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा विभाग, मानव

संसाधन विकास मंत्रालय द्वारा प्रोफ़ेसर मृणाल मीरी एवं प्रोफ़ेसर जी.पी. देशपांडे की अध्यक्षता में गठित निगरानी समिति (मॉनिटरिंग कमेटी) के सदस्यों को अपना मूल्यवान समय और सहयोग देने के लिए धन्यवाद देते हैं। व्यवस्थागत सुधारों और अपने प्रकाशनों में निरंतर निखार लाने के प्रति समर्पित एन.सी.ई.आर.टी. टिप्पणियों एवं सुझावों का स्वागत करेगी जिनसे भावी संशोधनों में मदद ली जा सके।

निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान
और प्रशिक्षण परिषद्

नयी दिल्ली
20 नवंबर 2006

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

अध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तक सलाहकार समिति

हरि वासुदेवन, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

मुख्य सलाहकार

नीलाद्रि भट्टाचार्य, *प्रोफ़ेसर,* इतिहास अध्ययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

सदस्य

उदय कुमार, *प्रोफ़ेसर,* समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता

जी. बालाचंद्रन, *प्रोफ़ेसर,* ग्रेजुएट इंस्टीट्यूट ऑफ़ इंटरनेशनल स्टडीज़, जिनेवा

जानकी नायर, *प्रोफ़ेसर,* समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता

तनिका सरकार, *प्रोफ़ेसर,* ऐतिहासिक अधययन केंद्र, जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नयी दिल्ली

पी.के. दत्ता, *प्रोफ़ेसर,* समाज विज्ञान अध्ययन केंद्र, कोलकाता

बृज तन्खा, *प्रोफ़ेसर,* पूर्वी एशियाई अध्ययन विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय

मोनिका जुनेजा, *प्रोफ़ेसर,* मारिया–गोएप्पेर्ट–मेयर गेस्ट प्रोफ़ेसर, हिस्टोरिचेस सेमिनार, हनोवर विश्वविद्यालय, जर्मनी

रेखा कृष्णन, *हेड ऑफ़ सीनियर स्कूल,* वसंत वैली स्कूल, नयी दिल्ली

रश्मि पालीवाल, एकलव्य, होशंगाबाद

शुक्ला सान्याल, *रीडर,* इतिहास विभाग, कलकत्ता विश्वविद्यालय, कोलकाता

शेखर बंद्योपाध्याय, *प्रोफ़ेसर,* मानवशास्त्र एवं समाज विज्ञान संकाय, वेलिंगटन विक्टोरिया विश्वविद्यालय, न्यूज़ीलैंड

हिंदी अनुवाद

योगेंद्र दत्त, सराय–सी.एस.डी.एस., दिल्ली

रविकान्त, सराय–सी.एस.डी.एस., दिल्ली

संजय शर्मा, *रीडर,* ज़ाकिर हुसैन कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

सदस्य-समन्वयक

किरण देवेंद्र, *प्रोफ़ेसर,* प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली।

भारत का संविधान

उद्देशिका

हम, भारत के लोग, भारत को एक [1][**संपूर्ण प्रभुत्व-संपन्न समाजवादी पंथनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य**] बनाने के लिए, तथा उसके समस्त नागरिकों को :

सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक **न्याय,**

विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म

और उपासना की **स्वतंत्रता,**

प्रतिष्ठा और अवसर की **समता**

प्राप्त कराने के लिए,

तथा उन **सब में**

व्यक्ति की गरिमा और [2][**राष्ट्र की एकता और अखंडता**] सुनिश्चित करने वाली **बंधुता**

बढ़ाने के लिए

दृढ़संकल्प होकर **अपनी इस संविधान सभा में** आज तारीख 26 नवंबर, 1949 ई. को **एतद्द्वारा इस संविधान को अंगीकृत, अधिनियमित और आत्मार्पित करते हैं।**

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''प्रभुत्व-संपन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।
2. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 2 द्वारा (3.1.1977 से) ''राष्ट्र की एकता'' के स्थान पर प्रतिस्थापित।

आभार

यह पुस्तक बहुत सारे इतिहासकारों, शिक्षकों और शिक्षाविदों की मिली-जुली कोशिशों का नतीजा है। हर अध्याय के लेखन, चर्चा और संशोधन में महीनों का समय लगा है। हम उन सभी के प्रति आभार प्रकट करना चाहते हैं जिन्होंने इन प्रक्रियाओं में हिस्सा लिया।

इस पुस्तक के अध्यायों को बहुत सारे लोगों ने पढ़ा है और महत्त्वपूर्ण बिंदुओं पर अपनी सलाह व मदद दी है। हम निगरानी समिति के सदस्यों को ख़ासतौर से धन्यवाद देना चाहते हैं जिन्होंने अध्यायों के शुरुआती मसौदे पर टिप्पणियाँ दीं। कुमकुम रॉय ने पाठ में कई संशोधन सुझाए, जी. अरुणिमा, गौतम भद्रा, सुप्रिया चौधरी, जयंती चट्टोपाध्याय, संगीता राज, संबुद्ध सेन, लक्ष्मी सुब्रमण्यम, ए.आर. वेंकटचलपति, टी.आर. रमेश बाएरी, सी.एस. वेंकेटेश्वरन और शहाना ने अध्याय 8 में मदद दी। पुरुषोत्तम अग्रवाल ने हिंदी उपन्यास वाला हिस्सा लिखने में मदद दी। न्गुन क्वॉच आन्ह ने अध्याय 3 के लिए वियतनामी पाठों के अनुवादों में मदद दी।

बहुत सारे संस्थानों और व्यक्तियों की उदार सहायता के बिना इस किताब को इतना आर्कषक और पठनीय नहीं बनाया जा सकता था। हम इन सभी के आभारी हैं : दि लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स एंड फ़ोटोग्राफ़्स डिवीजन; रबीन्द्र भवन फ़ोटो आर्काइव्ज़, विश्वभारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन; फ़ोटो आर्काइव्ज़, अमेरिकी दूतावास, नयी दिल्ली; इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, नयी दिल्ली; नेशनल मैन्युस्क्रिप्ट मिशन लाइब्रेरी, नयी दिल्ली; सेंटर फ़ॉर स्टडीज़ इन सोशल साइंसेज़, कोलकाता; आशुतोष कलेक्शन ऑफ़ दि नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता; रोजा मुथैया रिसर्च लाइब्रेरी ट्रस्ट, चेन्नई; इंडिया कलेक्शन, इंडिया इंटरनेशनल सेंटर; आर्काइव्ज़ ऑफ़ इंडियन लेबर, वी.वी. गिरी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लेबर, नयी दिल्ली; फ़ोटो आर्काइव्ज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्ट इंडीज़, त्रिनिदाद। ज्योतिन्द्र एवं जटा जैन ने सिविक आर्काइव्ज़ में सुरक्षित चित्रों के अपने विशाल भंडार को देखने का हमें भरपूर मौका दिया; पार्थिव शाह ने अपने संग्रह से कई चित्र उपलब्ध कराए। प्रभु महापात्रा ने गिरमिटिया मजदूरों के चित्र दिए; मुज़फ़्फ़र आलम ने शिकागो लाइब्रेरी से सामग्री उपलब्ध कराई; प्रतीक चक्रवर्ती ने केंट विश्वविद्यालय लाइब्रेरी से तसवीरों को स्कैन करके भिजवाया; अनीश वनायक एवं पार्थ शिल ने दिल्ली में फ़ोटो अनुसंधान किया।

परिषद् की ओर से ऋतु शर्मा, सरिता किमोठी, *डी.टी.पी. ऑपरेटर*; मनोज मोहन, यतेन्द्र कुमार यादव, *कॉपी एडीटर* ने अपना पूर्ण योगदान दिया। इतने कम समय में काम पूरा कर देने और पूरी परियोजना में इतनी दिलचस्पी लेने के लिए हम सभी साथियों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं।

हमने इस पुस्तक से जुड़े सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। अगर किसी का नाम भूलवश छूट गया हो तो हम उनसे क्षमा चाहते हैं।

श्रेय

फ़ोटोग्राफ़्स एवं तसवीरें

हम निम्नलिखित के प्रति आभार व्यक्त करना चाहते हैं–

संस्थान एवं फ़ोटो आर्काइव्ज़

आर्काइव ऑफ़ इंडियन लेबर, वी.वी. गिरी नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ़ लेबर (अध्याय 4 : 18, 19)
आशुतोष कलेक्शन ऑफ़ द नेशनल लाइब्रेरी, कोलकाता
कलेक्शन ज्योतिन्द्र एवं जटा जैन, सिविक आर्काइव्ज़ (अध्याय 2 : 11, 13, 14; अध्याय 4: 25, 26क, 26ख; अध्याय 5 : 17)
कल्चरल हेरिटेज एडमिनिस्ट्रेशन (सी.एच.ए.) चेओंग्जू एरली प्रिंटिंग म्यूज़ियम, रिपब्लिक ऑफ़ कोरिया (अध्याय 5 : 2क, 2ख)
लाइब्रेरी ऑफ़ कांग्रेस प्रिंट्स एंड फ़ोटोग्राफ़ी डिवीजन (अध्याय 3 : 20; अध्याय 5 : 40)
मैन्युस्क्रिप्ट मिशन कलेक्शन (अध्याय 5 : 14, 15, 16)
फ़ोटो आर्काइव, अमेरिकन लाइब्रेरी, नयी दिल्ली (अध्याय 3 : 21, 23)
फ़ोटो आर्काइव्ज़, यूनिवर्सिटी ऑफ़ वेस्ट इंडीज़, त्रिनिदाद (अध्याय 3 : 14, 15, 16)
पब्लिकेशन डिवीजन, सूचना (अध्याय 2 के फ़ोटोग्राफ़्स के लिए तसवीरें)
रोजा मुथैया रिसर्च लाइब्रेरी ट्रस्ट, चेन्नई

जर्नल्स

दि इलस्ट्रेटेड लंदन न्यूज़ (अध्याय 3 : 4, 6, 7, 8, 9, 11, 12, 13 अध्याय 4 : 4, 5, 6, 8, 12)
इलस्ट्रेटेड टाइम्स (अध्याय 4 : 12)
इंडियन शारिवारी (अध्याय 5 : 18)
ग्राफ़िक (अध्याय 3 : 13)

पुस्तकें

ब्रेमन, जॉन एवं पार्थिव शाह, *वर्किंग द मिल नो मोर* (अध्याय 4 : 21)
द्विवेदी, शारदा एवं राहुल मेहरोत्रा, *बॉम्बे : द सिटी विदिन* (अध्याय 2 : 1)
गोस्वामी, बी.एन., द *वर्ड इज़ सेक्रेड; सेक्रेड इज़ द वर्ड* (अध्याय 5 : 14, 15, 16)
चौधरी, के.एन., *ट्रेड एंड सिविलाइज़ेशन इन दि इंडियन ओशियन* (अध्याय 3 में मानचित्र)
रूहे, पीटर, *गांधी* (अध्याय 2 : 2, 3, 5, 8)

परिचय

हम एक ऐसी दुनिया में रहते हैं जहाँ राष्ट्रों की उपस्थिति स्वाभाविक मान ली गई है। हम लोगों को राष्ट्रों से जुड़ा हुआ, एक राष्ट्रीयता का हिस्सा मानकर चलते हैं। हम मानकर चलते हैं कि यह जुड़ाव आदिकाल से चला आ रहा है। हम देशों और राष्ट्रों को एक ही मानते हैं। दोनों शब्दों को पर्यायवाची की तरह देखते हैं। हम देशों को ऐसे एकीकृत भूक्षेत्रों के रूप में देखते हैं जिनकी एक निश्चित अंतर्राष्ट्रीय सीमा, एक सुपरिभाषित भूभाग, एक राष्ट्रीय भाषा और एक केंद्रीय सरकार होती है।

लेकिन अगर हम टाइम कैप्सूल में बैठकर अठारहवीं सदी के मध्य में जा पहुँचें और ऐसे राष्ट्रों को खोजने की कोशिश करें जैसे आज हमें दिखाई देते हैं तो वे हमें नहीं दिखेंगे। अगर हम लोगों से उनकी राष्ट्रीयता के बारे में पूछेंगे, उनकी राष्ट्रीय पहचान के बारे में पूछेंगे तो वे हमारे सवालों को समझ भी नहीं पाएँगे। दरअसल उस समय राष्ट्र अपने आधुनिक रूप में नहीं थे। लोग राजतंत्रों, छोटे–छोटे राज्यों, रियासतों, रजवाड़ों में रहते थे न कि राष्ट्रों में। प्रसिद्ध इतिहासकार एरिक हॉब्सबॉम ने एक बार कहा था कि आधुनिक राष्ट्रों का सबसे बेजोड़ पहलू उनकी आधुनिकता में निहित है। जी हाँ, इसके अस्तित्व का इतिहास 250 साल से पुराना नहीं है।

आधुनिक राष्ट्र किस तरह अस्तित्व में आया? किस तरह लोग खुद को एक राष्ट्र से जुड़ा हुआ मानने लगे?

एक राष्ट्र से जुड़ाव का भाव एक समय के बाद ही विकसित हुआ था। इस पुस्तक के पहले दो अध्यायों (खंड 1) में इसी इतिहास को समझने की कोशिश की गई है। यहाँ आप देखेंगे कि किस तरह यूरोप में राष्ट्रवाद का विचार उपजा, किस तरह भूभागों को एकजुट किया गया और राष्ट्रीय सरकारें बनाई गईं। यह दशकों तक चलने वाली प्रक्रिया थी जिसमें बहुत सारे युद्ध और क्रांतियाँ हुईं, बहुत सारे वैचारिक संघर्ष और राजनीतिक टकराव हुए। यूरोप की चर्चा (अध्याय 1) से हम अपना ध्यान भारत (अध्याय 2) में राष्ट्रवाद के विकास पर केंद्रित करेंगे, जहाँ राष्ट्रवाद का स्वरूप उपनिवेशवाद तथा साम्राज्यवाद विरोधी आंदोलनों से तय हुआ था। आपको यह समझने में मदद मिलेगी कि किस प्रकार औपनिवेशिक देशों में राष्ट्रवाद नाना प्रकार से अस्तित्व में आ सकता है, वहाँ बिलकुल अलग–अलग किस्म के आदर्शों का महिमामंडन हो सकता है और उन्हें अलग–अलग प्रकार की संघर्ष पद्धतियों के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

इन अध्यायों में राष्ट्रवाद की कहानी कई स्तरों पर आगे बढ़ेगी। इसमें आपको ज्युसेपे मेत्सिनी और महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं के बारे में पढ़ने को मिलेगा। राष्ट्रवाद को हम केवल महत्त्वपूर्ण नेताओं के शब्दों और कृत्यों तथा उनके नेतृत्व में घटी बड़ी व नाटकीय घटनाओं के जरिए नहीं समझ सकते। हमें आम लोगों की आकांक्षाओं और गतिविधियों को भी देखना होगा। देखना होगा कि दैनिक जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं में राष्ट्रवाद किस तरह अभिव्यक्त होता है और वह प्रत्यक्षत: भिन्न एवं असंबद्ध सामाजिक आंदोलनों से निर्धारित होता है। राष्ट्रवाद कैसे फैलता है, यह समझने के लिए हमें न केवल यह जानना पड़ेगा कि नेता क्या कहते थे बल्कि यह भी समझना होगा कि लोग उनके शब्दों को कैसे समझते व अपनाते थे। अगर हम इस बारे में जानना चाहते हैं कि लोग कैसे एक राष्ट्र के साथ जुड़कर देखने लगे तो हमें उस प्रक्रिया की महत्त्वपूर्ण राजनीतिक घटनाओं को ही नहीं बल्कि इसको भी समझना होगा कि राष्ट्रवादी भावनाओं को कला व साहित्य, गीत और कथाओं के जरिए कलाकारों और लेखकों ने किस तरह पोसा था।

खंड II में हम अर्थव्यवस्थाओं और आजीविकाओं पर विचार करेंगे। पिछले साल आपने चरवाहों और वनवासियों के बारे में पढ़ा था, जिन्हें बीते ज़माने के अवशेषों की तरह देखा जाता है जबकि वास्तव में वे इसी आधुनिक दुनिया का हिस्सा हैं जिसमें हम रहते हैं। इस साल हम उन घटनाओं पर विचार करेंगे

जिन्हें आधुनिकता का प्रतीक माना जाता है – वैश्वीकरण और औद्योगीकरण। इस भाग में हम इन बदलावों के इतिहास के विविध आयामों की पड़ताल करेंगे।

अध्याय 4 में आप देखेंगे कि किस तरह भूमंडलीकृत विश्व एक लंबे और जटिल इतिहास से उपजा है। प्राचीन काल से ही तीर्थयात्री, व्यापारी, मुसाफिर अपने साथ सामानों, जानकारियों और दक्षताओं को लिए दूर-दूर तक जाते रहे हैं। उन्होंने विभिन्न समाजों को इस प्रकार एक-दूसरे से जोड़ा है कि अकसर उनके अंतर्विरोधी परिणाम भी सामने आए हैं। खाने की चीजें और पौधों की प्रजातियाँ एक इलाके से दूसरे इलाके में जा पहुँचीं, सूचना और स्वाद बदल गए और बीमारी व मौत का दायरा भी फैल गया। जब पश्चिमी ताकतें 'सभ्यता' का झंडा लिए अफ़्रीका के दूर-दूर इलाकों में जा रही थीं, वहाँ की बेशकीमती धातुओं और दासों को यूरोप और अमेरिका ले जाया जा रहा था। जब वैश्विक बाजार के लिए कैरीबियाई द्वीप समूह के बागानों में कॉफी और गन्ने की खेती की जा रही थी तो इन बागानों के लिए भारत और चीन गिरमिटिया मजदूर भेजे जा रहे थे।

खंड III में आप मुद्रण संस्कृति के इतिहास को पढ़ेंगे। छपी हुई चीजों से घिरे हुए हम लोगों को यह कल्पना करना भी मुश्किल दिखाई पड़ सकता है कि एक जमाने में प्रिंटिंग जैसी चीज होती ही नहीं थी। अध्याय 5 में इस बात पर विचार किया गया है कि किस तरह समकालीन दुनिया का इतिहास छपाई तकनीक के विकास के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा रहा है। वहाँ आप देखेंगे कि छपाई ने सूचनाओं और विचारों, बहसों और चर्चाओं, विज्ञापन और प्रचार तथा नाना प्रकार के नए साहित्य के प्रसार को किस तरह संभव बनाया है।

जब हम रोज़मर्रा ज़िंदगी के ऐसे विषयों पर चर्चा करते हैं तो हम इस बात को समझने लगते हैं कि दुनिया की मामूली चीज़ों को समझने में भी इतिहास कितना मददगार हो सकता है।

नीलाद्रि भट्टाचार्य
मुख्य सलाहकार
इतिहास

विषय सूची
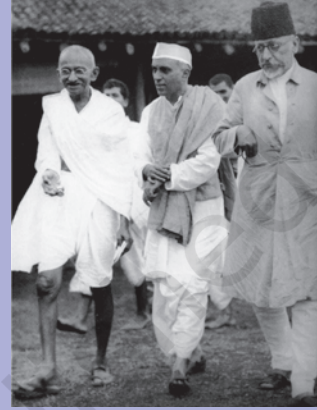
विस्तारित शिक्षा के लिये

आप क्यू आर कोड के माध्यम से निम्नलिखित अध्यायों का उपयोग कर सकते हैं–

- इंडो-चाइना में राष्ट्रवादी आंदोलन
- काम, आराम और जीवन
- उपन्यास, समाज और इतिहास

ये अध्याय पिछली पाठ्यपुस्तक में मुद्रित किए गये थे, वही विस्तारित शिक्षा के लिये डिजिटल मोड में भी उपलब्ध कराये जा रहे हैं।